अपने बच्चे को पैगंबर की कहानी सुनाईए
(पैगंबर की किशोरावस्था)

[हिन्दी – Hindi – هندي]

साइट रसूलल्लाह

अनुवादः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2013 - 1434

IslamHouse.com

احك لطفلك عن رسول الله

[شباب الرسول]

« باللغة الهندية »

موقع نصرة رسول الله

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2013 - 1434

IslamHouse.com

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की किशोरावस्था

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चाचा की सरपरस्ती की कहानी

जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा का निधन होने लगा तो उन्हों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चाचा अबू तालिब को आपकी परवरिश और देख-रेख की वसीयत की। चुनाँचे अब्दुल मुत्तलिब मृत्यु शयया पर थे और उनके बेटे उनके आस-पास बैठे हुए थे, तो उन्हों ने कहा : ऐ अबू तालिब! तो उन्हों ने कहा: ऐ क़ुरैश के सरदार ! मैं उपस्थिति हूँ। तो उन्हों ने कहा : आपके भतीजे मुहम्मद आपकी देख-रेख और सरपरस्ती में रहेंगे, क्योंकि आप उनके लिए उनके चचाओं में सबसे अधिक सुरक्षित हैं।

तो उन्हों ने कहा : ऐ क़ुरैश के सरदार आप चिंता न करें, क्योंकि मुहम्मद मुझे मेरे कुछ बेटों से भी अधिक प्रिय हैं।

इस पर अब्दुल मुत्तलिब ने कहा : आपके बारे में यही गुमान था, अतः आप उनकी अच्छी तरह देख-भाल करें, क्योंकि मेरे इस बेटे का एक महान मामला होगा।

अब्दुल मुत्तलिब की प्राण निकल गई, और लोग उनपर फूट-फूट कर रोने लगे। अबू तालिब मुहम्मद के बारे में उनकी वसीयत याद करते हैं, और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने चाचा की सरपरस्ती में आ जाते हैं।

अबू तालिब के घर में

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबू तालिब के घर में रहने लगे, वही घर जिसमें आपकी माँ ने आपको जन्म दिया था। आप अपने चाचा के पालन-पोषण और देख-भाल में रह रहे थे, और आपके चाचा की पत्नी (आपकी चाची) फातिमा बिन्त असद थीं, जो कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत प्यार करती थीं, और आपके प्रति अपने कर्तव्यों को आपकी माँ के समान निभाती थीं, और पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हें माँ कहकर बुलाते थे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने चाचा अबू तालिब से प्यार करते थे, और आपके चाचा अबू तालिब भी आपसे प्यार करते थे। चुनाँचे वह आपका सम्मान करते थे, और आपको अपने बच्चों पर प्राथमिकता देते थे। अबू तालिब को पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बरकत का एहसास हो गया था, चुनाँचे वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ही खाना खाते थे, क्योंकि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके साथ खाते थे तो वे पेट भरकर उठते थे, और अगर आप उनके साथ नहीं होते थे तो वे पेट भरकर (तृप्त होकर) नहीं उठते थे, और अबू तालिब एक गरीब आदमी थे।

बच्चे की बरकत

एक बार मक्का में गंभीर सूखा पड़ा, चुनाँचे पानी की क़िल्लत होगई, और लोग अत्याधिक गरीबी के शिकार हो गए। ऐसी परिस्थिति में, उनकी यह आदत थी कि वे काबा के पास जाते थे, और किसी नेक आदमी (सदाचारी) के माध्यम से बारिश माँगते थे। उन्हों ने अबू तालिब से अनुरोध किया कि वह वर्षा माँगें। चुनाँचे अबू तालिब,

अपने भतीजे मुहम्मद को अपने साथ लेकर बाहर निकले और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पीठ को काबा के साथ लगाकर, अल्लाह तआला से यह दुआ करने में लगे रहे कि उन पर वर्षा बरसाए, ताकि ऐसा न हो कि बच्चे, औरतें और पुरूष मर जाएं। तथा क़ुरैश के सभी लोग यह दुआ कर रहे थे कि अल्लाह तआला अबू तालिब की दुआ को क़बूल फरमाए।

अबू तालिब निरंतर अल्लाह के पैगंबर के द्वारा बारिश माँगते रहे यहाँ तक कि आकाश में बादल एकत्रित हो गए, और बारिश होने लगी। सभी लोग खुश हो गए। उन्हें रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बरकत का पता चल गया। तथा अबू तालिब बहुत खुश हुए कि अल्लाह तआला ने उनकी दुआ क़बूल कर ली। वह अपने भतीजे को लेकर अपने घर लौटे, और आपका उनके प्रति प्यार बढ़ गया था।

बहीरा राहिब

जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बारह वर्ष के होगए, तो अबू तालिब ने व्यापार के लिए शाम के देश की ओर निकलने का इरादा

किया। अबू तालिब बैठकर सोचने लगे कि यह कैसे हो सकता है कि वह मुहम्मद को अकेले छोड़े दें और स्वयं शाम की यात्रा पर निकल जाएं। वह उन्हें अकेले छोड़ने की ताक़त नहीं रखते थे। सो, उन्हों ने अपने भतीजे को अपने साथ ले जाने का फैसला किया।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत प्रसन्न हुए, और अबू तालिब के साथ यात्रा करने के लिए तैयार हो गए। सामान से लदे ऊँटों को लेकर क़ाफिला चल पड़ा, उसके साथ अबू तालिब और अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी थे। शाम देश की सीमाओं पर बुसरा नामी स्थान पर क़ाफिला ठहर गया, ताकि व्यापारी लोग रास्ते के थकान से आराम कर सकें। उनके निकट ही एक राहिब (पादरी) की कुटी थी, उसका नाम "बहीरा" था। उसने तौरात और इंजील पढ़ रखा था। जब उसने मुहम्मद को देखा तो पहचान लिया कि आप इस उम्मत (राष्ट्र) के पैगंबर हैं।

बहीरा की दावत

किंतु बहीरा को कैसे पता चला कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस राष्ट्र के नबी हैं ? बहीरा ने तौरात और इंजील पढ़ी थी,

और अल्लाह तआला ने इन दोनों किताबो में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गुणों का उल्लेख किया है। अतः बहीरा को आपके गुणों का पता चल गया। सो, उसने उन्हें आवाज़ देकर बुलाया ताकि वह उनकी मेहमानी करे। जबकि वे लोग इससे पहले भी उसके पास से गुज़रते थे, लेकिन वह उनकी मेहमानी नहीं करता था।

उसने पुकार कहा : हे क़ुरैश के व्यापारियो! मैं ने तुम्हारे लिए खाना बनाया है, और मैं चाहता हूँ कि आपके छोटे और बड़े, गुलाम और आज़ाद, सभी लोग उपस्थित हों। तो क़ौम के एक आदमी ने कहा : अल्लाह की क़सम! ऐ बहीरा, आज तेरा ज़रूर कोई मामला है। निःसंदेह हम (पहले भी) तेरे पास से गुज़रते थे, परंतु तू हमारे साथ वैसा नहीं करता था जो तू आज करना चाहता है। तो उसने कहा : तू ने सच कहा, लेकिन मैं आज तुम्हारा सम्मान करना चाहता हूँ। अतः तुम अपने में से आज़ाद और सरदार, छोटे और बड़े, सबको हाज़िर करो, तुम में से कोई पीछे न रहे।

मुहम्मद इस राष्ट्र के संदेष्टा हैं

चुनाँचे पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अलावा क़ाफिले का प्रत्येक आदमी उसके पास आया, उन्हों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को छोड़ दिया था। जब पादरी बहीरा ने लोगों के चेहरों को ध्यान से देखा, तो कहा : हे क़ुरैश के व्यापारियो ! तुम में से कोई आदमी पीछे न रह जाए। तो उनमें से एक आदमी खड़ा हुआ और पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को लेकर आया, चुनाँचे उसने उन्हें खिलाया और पिलाया। बहीरा अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुछ चीज़ों के बारे में पूछता था, और पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसे जवाब देते थे। सो, उस पादरी को पता चल गया कि इस नौजवान के अंदर वे सभी गुण विशेषण मौजूद हैं जिन्हें तौरात और इंजील ने उल्लेख किया है, और यह कि आप इस उम्मत के पैगंबर हैं।

फिर पादरी बहीरा आगे बढ़ा और अबू तालिब से पूछा : इस बच्चे का आपके निकट क्या स्थान है ? तो उन्हों ने कहा : वह मेरा बेटा है।

तो उसने कहा कि वह आपका बेटा नहीं है, और उसके पिता को जीवित नहीं होना चाहिए।

बहीरा की अबू तालिब को नसीहत

इस पर अबू तालिब ने बहीरा से कहा : वह मेरा भतीजा है और उसके पिता का निधन हो चुका है। बहीरा ने पूछा : और इसकी माँ का क्या हुआ ? तो अबू तालिब ने कहा : वह निकट ही मर चुकी हैं। उसने कहा : आप ने ठीक कहा। फिर बहीरा ने अबू तालिब को नसीहत करते हुए कहा : हे अबू तालिब! आप अपने भतीजे को अपने देश लेकर जाएँ और उसके ऊपर यहूद से सावधान रहें। क्योंकि अल्लाह की क़सम! अगर उन्हें इसके बारे में उस चीज़ का पता चल गया जो मुझे पता है तो वे इसे ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे। आपके बेटे का मामला बहुत महान है, क्योंकि हम इसे अपनी किताबों में पाते हैं और हमें हमारे बाप-दादा से ऐसा ही वर्णन किया गया है। मैं आपका बेहतरीन विश्वस्त शुभचिंतक हूँ। अतः आप इसे जल्दी से इसके देश ले जाएँ।

चुनाँचे अबू तालिब ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अपने कुछ गुलामों को भेजा और वे आपको वापस लेकर मक्का आगए, और अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रक्षा की।